माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का बुन्देली समरोह-13 के उद्‌घाटन समारोह में उदबोधन

स्थान :- भोपाल दिनांक :- 25 जून, 2013 समय :- शाम 6:30बजे

बुंदेलखंड के महानायक बुंदेल केसरी छत्रसाल की जयंती के अवसर पर आयोजित बुंदेली समारोह - 2013 में भाग लेते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस समारोह में सम्मानित होने वाले बुंदेली साहित्यकारों, विद्‌वानों और विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाली विभूतियों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

जिन्हें उत्तराधिकार में सत्ता नहीं वरन शत्रु और संघर्ष ही विरासत में मिले हों, ऐसे बुंदेल केसरी छत्रसाल ने वस्तुत: जीवनभर स्वतंत्रता और सृजन के लिए ही सतत संघर्ष किया। उन्होंने विस्तृत बुंदेलखंड राज्य की गरिमामय स्थापना ही नहीं की थी वरन् साहित्य सृजन कर जीवन काव्य भी रचे। उनके शौर्य और सृजन की ऐसी उपलब्धि बेमिसाल है-

""इत जमना उत नर्मदा इत चंबल उत टोंस।

छत्रसाल से लरन,की रही न काहू होंस।""

वीरों और हीरोंवाली माटी के इस लाडले सपूत ने कलम और तलवार को एक सी गरिमा प्रदान की थी।

छत्रसाल की तलवार जितनी धारदार थी, कलम भी उतनी ही तीक्ष्ण थी। वे स्वयं कवि तो थे ही कवियों और साहित्यकारों का सम्मान भी करते थे। इसका एक +Êu¦iÉÒªÉ उदाहरण हमारे सामने है जब कवि भूषण पालकी में बुंदेलखंड में प्रवेश कर रहे थे तो छत्रसाल ने उनकी अगवानी में पालकी में अपना कंधा लगा दिया। श्री भूषण आश्चर्यचकित रह गये और उनके मुख से शब्द निकले-

""और राव राजा एकचित्त में न ल्याऊं अब

साहू को सराहौं,के सराहो छत्रसाल को।।""

बुंदेली मीठी और सरल बोली है और हिन्दी भाषा से मिलती-जुलती है। तुलसीकृत रामचरित मानस में 40 प्रतिशत बुंदेली शब्द हैं। विभिन्न प्रवृत्तियों और आन्दोलनों के आधार पर बुंदेलखण्ड काव्य के कुल सात युग माने जा सकते हैं। जहां बुंदेली कवियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन का अलख जगाया वहीं आधुनिक चेतना एवं ग्रामीण जीवन सहित समाज के हर पहलु पर काव्य प्रस्तुत किये। बुंदेली साहित्यकारों और कवियों की रचनाओं का ही परिणाम है कि 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन में बुंदेलखंड के वीरों ने बलिदान दिए। आजादी की लड़ाई में भी बुंदेलखंड अंचल का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

बुंदेलखंड मध्यभारत का एक प्राचीन क्षेत्र है। इसका विस्तार मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में भी है। भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुंदेलखंड में जो एकता और समरसता है उसके कारण यह क्षेत्र अपने आप में सबसे अनूठा बन पड़ता है। वर्तमान में बुंदेलखंड क्षेत्र की स्थिति बहुत ही गंभीर है। बुंदेलखंड के विकास और उत्थान के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा विशेष प्रयास किये गये हैं। केन्द्र सरकार ने जहां बुंदेलखंड के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की है वहीं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा बुंदेली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान प्रदान करने के प्रयास किये गये हैं। किसी भी समाज, क्षेत्र या वर्ग के विकास के लिए सरकारी स्तर पर ही किये जा रहे प्रयास काफी नहीं हैं, इसके लिए उस समाज के साहित्यकारों, समाजसेवियों और विद्वानों को आगे आना होगा।

आज का युवा वर्ग नैतिक मूल्यों और सदाचार से दूर होता जा रहा है यह चिंता का विषय है। इस ओर सामाजिक संगठनों और बुजुर्गों को ध्यान देना होगा। वे युवाओं को नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण के बारे में सीख दें।

इस सम्बन्ध में यह कहना अप्रसांगिक नही होगा कि एक युद्ध में महाराज छत्रसाल ने शत्रु का वध करने में सफलता प्राप्त कर ली। इस युद्ध में विजयी होने के पश्चात् महाराज छत्रसाल ने शत्रु के क्षेत्र पर कब्जा नही किया अपितु पराजित शत्रु के बेटे को पूरी जागीर दे दी और इसके अतिरिक्त उसे अपनी ओर से नई जागीर तथा कुछ नगदी भी दे दी। युद्ध में भी इन्होंने महिलाओं का बड़ा सम्मान किया है। उनके ऊपर अत्याचार नहीं होने दिया,यह उनकी महानता का प्रतीक है।

अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद द्वारा अपनी विरासत को संजोय रखने के लिए जो प्रयास किये जा रहे हैं वह सराहनीय हैं। इस समय संविधान की आठवीं सूची में 22 भाषायें सम्मलित हैं। मुझे आशा है कि आप सबके प्रयासों से एक दिन बुंदेली भाषा को भी सम्मानजनक स्थान मिल सकेगा।

आज मैं बुंदेली संस्कृति के संवाहकों को सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। ऐसे सफल आयोजन के लिए आप सब बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा है कि बुंदेली समारोह की यह परम्परा, बुंदेलखंड अंचल की पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठापित करने में सफल होगी।

जयहिन्द।